कक्षा 10वीं, संस्कृत (बिहार बोर्ड, पीयूषम् भाग 2)

1. मङ्गलम्

संस्कृत पीयूषम् भाग 2, प्रथम पाठ #1. मङ्गलम् पाठ नोट्स

1. उपनिषद के रचनाकार (Author/Compiler) :

उपनिषदों की संख्या :

- कुल 108 उपनिषद प्रमुख रूप से माने जाते हैं।

- प्राचीन ग्रंथों में 200 से अधिक उपनिषदों का उल्लेख है, लेकिन शास्त्रीय और महत्वपूर्ण 108 उपनिषदों को ही प्रमुख माना जाता है।

सारांश:

रचनाकार : महर्षि वेदव्यास

संख्या : 108 प्रमुख उपनिषद

2. उपनिषदों का स्थान :

- उपनिषद वैदिक साहित्य का अंतिम भाग हैं।
- ये दर्शनशास्त्र के सिद्धांतों को व्यक्त करते हैं।
- यहाँ मुख्य रूप से आत्मा (आत्मा/परमात्मा) और ब्रह्म का महत्व बताया गया है।

3. परमात्मा का स्वरूप :

- उपनिषदों में परमात्मा (परमपुरुष) की महिमा का वर्णन प्रधान रूप से किया गया है।
- परमात्मा सम्पूर्ण जगत का पालन और संचालन करता है।

- जगत में जो कुछ भी है, वह परमात्मा द्वारा व्याप्त (फैला हुआ) और अनुशासित है।

4. उपदेश का उद्देश्य :

- तपस्या और साधना का परम लक्ष्य परमात्मा की प्राप्ति है।
- व्यक्ति का अंतिम उद्देश्य आत्मा/परमात्मा से एकरूप होना है।

5. पाठ का स्वरूप :

- इस पाठ में पाँच मन्त्रों को संकलित किया गया है।
- ये मन्त्र पद्यात्मक (काव्य रूप में) हैं और धार्मिक व आध्यात्मिक भाव व्यक्त करते हैं।
- मन्त्रों का मूल उद्देश्य शुभ आरंभ और मंगल कामना है।

6. महत्वपूर्ण बिंदु :

- उपनिषद ज्ञान और दर्शन का स्रोत हैं।
- आत्मा/परमात्मा की महिमा का बोध कराते हैं।
- जीवन का अंतिम लक्ष्य आध्यात्मिक उन्नति और मोक्ष है।

कक्षा 10वीं, संस्कृत (बिहार बोर्ड, पीयूषम् भाग 2)

1. मङ्गलम्

1. हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥

- हिरण्मयेन पात्रेण = सोने के पात्र में
- सत्यस्यापिहितं मुखम् = सत्य का मुख छिपा हुआ
- तत्त्वं पूषन्नपावृणु = हे पूषन्, तत्त्व प्रकट करो
- सत्यधर्माय दृष्टये = सत्य और धर्म देखने के लिए

अर्थ:

सत्य का असली रूप सोने के पात्र में छिपा हुआ है।
हे ब्रह्मांड के पोषक! हमें वह सत्य दिखाओ ताकि हम धर्म और सत्य को समझ सकें।

सरल सार:

"सत्य का असली रूप छिपा है; पूषन् हमें इसे देखने और समझने की शक्ति दें।"

कक्षा 10वीं, संस्कृत (बिहार बोर्ड, पीयूषम् भाग 2)

1. मङ्गलम्

2. अणोरणीयान् महतो महीयान् आत्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्।
तमक्रतुः पश्यति वीतशोको धातुप्रसादान्महिमानमात्मनः ॥

- अणोरणीयान् = सूक्ष्म से
- महतो महीयान् = महान तक
- आत्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम् = हर जीव के भीतर छिपा हुआ
- तमक्रतुः पश्यति = जो कर्मबंध से मुक्त है वह देखता है
- वीतशोको धातुप्रसादान्महिमानमात्मनः = अपने भीतर की महिमा और दिव्यता

अर्थ:

प्रत्येक जीव के भीतर अति सूक्ष्म से अति महान तत्व छिपे हैं।
जो व्यक्ति कर्मों से मुक्त है, वह अपने भीतर की महिमा और दिव्यता को देखता है।

सरल सार:

"हर जीव के अंदर सूक्ष्म से महान तत्व हैं; जो कर्मबंध से मुक्त है, वह अपने अंदर की दिव्यता को देखता है।"

3. सत्यमेव जयते नानृतं
सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाक्रमन्त्यूषयो ह्याप्तकामा यत्र तत् सत्यस्य परं निधानम् ॥

- सत्यमेव जयते = केवल सत्य की ही विजय होती है
- नानृतं = झूठ कभी नहीं टिकता
- सत्येन पन्था विततो देवयानः = सत्य का मार्ग देवताओं तक फैला है
- येनाक्रमन्त्यूषयो ह्याप्तकामा = जिससे इच्छित सुख और कामनाएँ पूरी होती हैं
- यत्र तत् सत्यस्य परं निधानम् = वही सत्य का परम स्थान है

अर्थ:

केवल सत्य की ही विजय होती है, झूठ कभी स्थायी नहीं रहता।
सत्य के मार्ग से देवताओं का मार्ग फैला हुआ है।
जिस मार्ग से इच्छित सुख (इन्द्रियों और आत्मा की कामनाएँ) प्राप्त होती हैं, वही सत्य का परम स्थान है।

सरल सार:

"सत्य ही जीत है; सत्य का मार्ग वह है जो परम सत्य तक ले जाता है।"

4. यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय।
तथा विद्वान् नामरूपाद् विमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम्॥

- यथा नद्यः स्यन्दमानाः = जैसे नदियाँ बहती हैं
- समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति = समुद्र में मिल जाती हैं
- नामरूपे विहाय = अपने नाम और रूप को छोड़कर
- तथा विद्वान् = वैसे ही ज्ञानी व्यक्ति
- नामरूपाद् विमुक्तः = नाम और रूप से मुक्त होकर
- परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम् = परमात्मा में विलीन हो जाता है

अर्थ:

जैसे नदियाँ अपने नाम और रूप को छोड़कर समुद्र में मिल जाती हैं, वैसे ही ज्ञानी व्यक्ति अपने अहंकार (नाम और रूप) को त्याग कर परमात्मा में विलीन हो जाता है।

सरल सार:

"जैसे नदियाँ अपने नाम और रूप छोड़कर समुद्र में मिल जाती हैं, वैसे ही ज्ञानी व्यक्ति अहंकार छोड़कर परमात्मा में विलीन हो जाता है।"

5. वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम् आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय॥

- वेदाहमेतं = मैं जानता हूँ
- पुरुषं महान्तम् = इस महान पुरुष को
- आदित्यवर्णं = सूर्य समान प्रकाशमान
- तमसः परस्तात् = अंधकार से परे
- तमेव विदित्वा = उसे जानकर
- मृत्युमेति = मृत्यु से पार जाता है
- नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय = मुक्ति का अन्य कोई मार्ग नहीं है

अर्थ :

मैं जानता हूँ इस महान पुरुष (परमात्मा) को, जो सूर्य के समान प्रकाशमान है और अंधकार से परे है।
जिसे जानकर कोई व्यक्ति मृत्यु से पार पाता है; मुक्ति का और कोई मार्ग नहीं है।

सरल सार :

"जो व्यक्ति इस महान, प्रकाशमान परमात्मा को जान लेता है, वही मृत्यु से मुक्त होता है; मुक्ति का और कोई मार्ग नहीं है।"

1. मङ्गलम्

1. 'मङ्गलम्' पाठ में कुल कितने मंत्र हैं? [2023AI]

(A) पाँच

(B) तीन

(C) चार

(D) छः

2. 'अत्येति' पद का अर्थ है [2023AI]

(A) पार कर जाता है।

(B) सुना जाता है।

(C) देखा जाता है।

(D) कार्य किया जाता है।

3. "सत्यमेव जयते..." किस उपनिषद् से संकलित है? [2021AI]

(A) ईशावास्योपनिषद्

(B) मुण्डकोपनिषद्

(C) कठोपनिषद्

(D) श्वेताश्वेतरोपनिषद्

4. किसकी जीत नहीं होती है? [2018AII, 2021AI]

(A) सत्य

(B) धर्म

(C) असत्य

(D) शक्ति

5. छोटे से भी छोटा और बड़े से भी बड़ा क्या है? [2021AII]
(A) ईश्वर
(B) शरीर
(C) आत्मा
(D) मन

6. नदियाँ समुद्र में कैसे मिलती हैं? [2021AII, 2025AII]
(A) नाम को छोड़कर
(B) रूप को छोड़कर
(C) नाम और रूप के साथ
(D) नाम और रूप को छोड़कर

7. सत्य का मुख किससे ढँका है? [2015AI, 2018AI, 2020AI, 2024AI]
(A) असत्य से
(B) हिरण्मय पात्र से
(C) स्वार्थ से
(D) अशांति से

8. 'सत्यमेव जयते' किस उपनिषद् का मूलमंत्र है? [2020AI, 2024AI]
(A) ईशावास्योपनिषद्
(B) बृहदारण्यकोपनिषद्
(C) मुण्डकोपनिषद्
(D) कठोपनिषद्

9. 'मङ्गलम्' पाठ कहाँ से संकलित है? [2018AII]

(A) वेद से

(B) पुराण से

(C) उपनिषद् से

(D) वेदांग से

10. 'हिरण्मयेन पात्रेण ... दृष्ट्ये।' यह मंत्र किस उपनिषद् से उद्धृत है? [2020AП, 2025AI]

(A) ईशावास्योपनिषद्

(B) मुण्डकोपनिषद्

(C) कठोपनिषद्

(D) श्वेताश्वेतरोपनिषद्

11. महान् से भी महान् क्या है? [2019AII, 2018AII]

(A) आत्मा

(B) परमात्मा

(C) संसार

(D) इनमें से कोई नहीं

12. यह संपूर्ण संसार किसके द्वारा अनुशासित है? [2019AII]

(A) आत्मा

(B) परमात्मा

(C) साहित्य

(D) इनमें से कोई नहीं

13. 'वेदाहमेतं पुरुषं महानतम् ... विद्यतेऽयनाया।' मंत्र किस उपनिषद् से लिया गया है? [2018AI]
(A) कठोपनिषद् से
(B) श्वेताश्वेतरोपनिषद् से
(C) मुण्डकोपनिषद्
(D) ईशावास्योपनिषद् से

14. 'यथा नद्यः स्यन्दमानाः ... पुरुषमुपैति दिव्यम्।' पद्यांश किस उपनिषद् का है? [2023AI]
(A) कठोपनिषद्
(B) ईशावास्योपनिषद्
(C) मुण्डकोपनिषद्
(D) श्वेताश्वतरोपनिषद्

15. 'अणोरणीयान् महतो ... महिमानमात्मनः।' मंत्र किस उपनिषद् से संगृहीत है? [2018AII]
(A) मुण्डकोपनिषद् से
(B) कठोपनिषद् से
(C) श्वेताश्वेतरोपनिषद् से
(D) ईशावास्योपनिषद् से

16. नदियाँ नाम और रूप को छोड़कर किसमें मिलती है? [2018AII]
(A) समुद्र में
(B) मानसरोवर में
(C) तालाब में
(D) झील में

17. 'अणोरणीयान् ...... महीयान्' पद्यांश के रिक्त स्थान में कौन-सा पद होगा? [2022AI]
(A) महतो
(B) जगतो
(C) जन्तोः
(D) वितरण

18. स्वर्णमय पात्र से किसका मुँह ढका हुआ है? [2022AI]
(A) कलश का
(B) सत्य का
(C) घर का
(D) धर्म का

19. 'ऋतस्य' पद का अर्थ है [2024AI]
(A) मुख का
(B) पात्र का
(C) सत्य का
(D) द्वार का

20. 'सत्य' से किसका मार्ग प्रशस्त होता हैं? [2025AI]
(A) घर का
(B) स्वर्गलोक का
(C) यमलोक का
(D) देवलोक का

21. 'अपावृणु' पद का क्या अर्थ है? [2025AI]
(A) ढका हुआ
(B) छोड़ दें
(C) हटा दें
(D) विस्तार होता है

22. छोटे से छोटा और बड़े से भी बड़ा क्या है? [2025AII]
(A) ईश्वर
(B) मन
(C) आत्मा
(D) शरीर

1. मङ्गलम्

Answer Key :

1 (A), 2 (A), 3 (B), 4 (C), 5 (C), 6 (D), 7 (B), 8 (C), 9 (C), 10 (A), 11 (A), 12 (B), 13 (B), 14 (C), 15 (B), 16 (A), 17 (A), 18 (B), 19 (C), 20 (D), 21 (C), 22 (C)

लघु उत्तरीय प्रश्न और उत्तर (Short Answer Questions and Answers)

1. आत्मा के स्वरूप का वर्णन करें। [2021AI, 2023A]

उत्तर: आत्मा मनुष्य के शरीर रूपी **गुफा** में बंद है। यह **छोटी से छोटी** तथा **बड़ी से बड़ी** है। यह प्राणी के **हृदय रूपी गुफाओं** में बंद रहती है। **शोक रहित** होकर इस **परमात्मा** की प्राप्ति होती है।

2. विद्वान् परमात्मा के पास क्या छोड़कर जाते हैं?

अथवा नदियाँ समुद्र में कैसे मिलती हैं? [2021AII, 2022AII]

उत्तर: जिस प्रकार **बहती हुई नदियाँ** अपने **नाम और स्वरूप** को छोड़कर समुद्र में मिल जाती हैं, उसी प्रकार विद्वान् पुरुष भी अपने **नाम और रूप** (पहचान) को छोड़कर सर्वश्रेष्ठ तथा दिव्य पुरुष **अर्थात् ब्रह्म को प्राप्त कर लेते हैं**। विद्वान् लोग अपने **अहंकार और घमंड** को त्याग कर परमात्मा के पास जाते हैं।

3. नदी और विद्वान् में क्या समानता है? [2020AI, 2025AII]

उत्तर: नदी और विद्वान् में यह समानता है कि जिस प्रकार नदी बिना **स्वार्थभाव** के सभी के सुख सुविधा के लिए बहती है और उसके लिए सभी (अमीर-गरीब) एक समान हैं, ठीक उसी प्रकार **विद्वान् व्यक्ति** भी अमीर, गरीब, ऊँच-नीच का बिना ख्याल किए हुए **सभी के साथ अच्छा विचार प्रकट करता है**। वह सभी को अच्छी सलाह देता है और अपने को कष्ट देकर भी **दूसरों की भलाई करता है**।

4. आत्मा का स्वरूप कैसा है, यह कहाँ रहती है? [2020AII, 2023AII, 2025AII]

उत्तर: आत्मा का स्वरूप यह है कि यह **छोटी से छोटी** (अणु से भी सूक्ष्म) तथा **बड़ी से बड़ी** (महान से भी महान) है। यह प्राणी के **हृदय रूपी गुफाओं** में बंद रहती है।

5. 'मंगलम्' पाठ के आधार पर सत्य का स्वरूप बतायें। [2019AI, 2024AI]

उत्तर: 'मङ्गलम्' पाठ के आधार पर सत्य का स्वरूप निम्न प्रकार है:

- सत्य का मुख **स्वर्ण आवरण** (सोने के पात्र) से ढँका हुआ है।
- सत्य धर्म की प्राप्ति हेतु इस आवरण को **हटा देना चाहिए**।
- हमेशा **सत्य की जीत होती है** तथा असत्य की हार होती है।
- सत्य से ही **देवलोक का रास्ता** प्राप्त होता है।

6. महान् लोग संसाररूपी सागर को कैसे पार करते हैं? [2019AII]

उत्तर: महान् लोग यह जानते हैं कि **परमात्मा प्रकाश स्वरूप (ज्ञानी) हैं** और मैं अंधकार स्वरूप अर्थात् **अल्पज्ञ** (कम जानने वाला) हूँ। इस प्रकार के विचार को जानकर ही वे (विद्वान पुरुष) **मृत्यु को वश में कर लेते हैं**। वे यह भी जानते हैं कि ईश्वर को जानने और प्राप्त करने के अतिरिक्त **अन्य कोई रास्ता संसार रूपी सागर से पार उतरने का नहीं है**।

7. विद्वान् मृत्यु को कैसे पराजित करते हैं? [2022AI, 2025AII]

उत्तर: विद्वान् पुरुष नाम और रूप को त्यागकर मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हैं। मुण्डकोपनिषद् में कहा गया है कि जिस प्रकार नदियाँ अपने **नाम और रूप** को त्यागकर समुद्र में एक हो जाती है, उसी प्रकार विद्वान् पुरुष भी अपने नाम और रूप (पहचान) को त्यागकर **ब्रह्म को प्राप्त करके** मृत्यु को पार कर लेते हैं।

8. 'मङ्गलम्' पाठ का पाँच वाक्यों में वर्णन करें। [2022AII]

उत्तर: 'मङ्गलम्' पाठ का पाँच वाक्यों में वर्णन निम्नलिखित है:

1. यह पाठ विभिन्न **उपनिषदों** से संकलित है।
2. इसमें **आत्मा तथा परमात्मा के स्वरूप** का वर्णन है।
3. यह पाठ सत्य की महत्ता को बताता है और कहता है कि **सत्य की हमेशा जीत होती है**।

4. इसमें बताया गया है कि महान् लोग अपने **नाम-रूप** को त्यागकर **ब्रह्म की प्राप्ति** करते हैं।
5. यह परमात्मा को **सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक और सत्यस्वरूप** बताता है।

9. उपनिषद् में किसका वर्णन है? [2024AII]

उत्तर: उपनिषद् में **दर्शनसिद्धान्तों** का वर्णन है। इसमें सभी जगह **परमात्मा (ईश्वर) का गुणगान** किया गया है। परमात्मा को **सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सत्यस्वरूप** और हमेशा विद्यमान रहने वाला कहा गया है। परमात्मा के द्वारा ही संसार **व्याप्त और अनुशंसित** है। सत्य की पराकाष्ठा ही **ईश्वर का मूर्तरूप** है और ईश्वर ही सभी तपस्याओं का **परम लक्ष्य** है।